# संस्कृत वाड्.मय – सर्वजन हिताय

**ज्योति त्रिपाठी**
असिसटेन्ट प्रोफेसर, संस्कृत विभाग
महिला पी0जी0 कालेज, बहराइच।

**शोध–सार**

*आज मानव समाज की विक्षिप्त अवस्था में संस्कृत भाषा एवं साहित्य को एक औषधि के रूप में देखा जा सकता है। आज का युवा इस भ्रम जाल में पड़ा है कि वर्तमान समय में यह भाषा औचित्य हीन है तथा नवीन ज्ञान के अभाव में, वैज्ञानिकता से रहित हो अर्थकारी नही हो सकती। ऐसे में आवश्यकता इस भाषा की वैज्ञानिकता एवं ज्ञान भण्डार को सिद्ध करने की हो जाती है जो वास्तव में इसका मूल आधार है। सर्वप्रथम सर विलियम जोन्स ने इस भाषा एवं साहित्य के खजाने को खोजना प्रारम्भ किया। तत्पश्चात् यूरोप के देशों जर्मनी, फ्रांस एवं रूस में भी यह कार्य प्रारम्भ किया गया तथा यूरोपीय विज्ञान की नींव डाली गई। इन्होंने संस्कृत, फारसी, लातिनी, यूनानी, स्लाब, ल्यूतोनी, केल्ती इत्यादि को सम्बन्धित कर भाषा विज्ञान एवं पुरातत्व अध्ययन का एक नया मार्ग खोजा।*

*संस्कृत व्याकरण में पृथक ध्वनि हेतु पृथक शब्द, एक ध्वनि के लिए एक ही शब्द इसकी वैज्ञानिकता सिद्ध करती है। इसमें अंकगणित, बीजगणित एवं रेखागणित के पुट पूरी तरह दिखाई देते हैं। धन ऋण, गुणा, भाग, कोण, वर्ग इत्यादि इसके गणितीय होने की पुष्टि करते हैं जो कि वैदिक युग में आर्यों द्वारा ज्ञात था। बोधायन, आस्तम्भ इसके ज्वलन्त प्रमाण हैं। आर्यभट्ट द्वारा, ज्या कोटिज्या इत्यादि की खोज नक्षत्रों की सही गति बतलाती है। इसी का परिणाम हाल में भारत द्वारा किए गए चन्द्रयान –2 मिशन भी है। इस भाषा ने वर्तमान अंकक्रम की नींव रख सम्पूर्ण विश्व में गणित एवं ज्योतिष की नींव रखी। ज्योतिष का विचार भारत में वैदिक काल से ही था। इसी प्रकार भिन्न–भिन्न क्षेत्रों में संस्कृत के महान विद्वान जैसे आयुर्वेद–सुश्रुत भौतिक शास्त्री वराहमिहिर, गणितीय विद्वान ब्रहमगुप्त, रसायनशास्त्री नार्गार्जुन, आयुर्वेद–वाग्भट्ट, ज्योतिषाचार्य भास्काराचार्य आदि हुए। इसी प्रकार संस्कृत की कई शाखाएं विज्ञान की शाखाओं से जुड़ी थीं जैसे दर्शन भौतिकी से, भूगोल ऋग्वेद की प्राकृतिक घटनाओं से, सांख्य अणु परमाणु आदि वैज्ञानिक गतिविधियों से, अथर्वेद और आयुर्वेद से जुड़े हैं। इसी प्रकार वनस्पति शास्त्र को भेषज भी कहा जाता है। वास्तुकला एवं चित्रकला के लिए मत्स्य पुराण, अग्नि पुराण, भविष्य पुराण आदि संस्कृत भाषा के ग्रन्थ प्रसिद्ध हैं। यह भाषा कम्प्यूटर के लिए 'जावा' से अधिक कारगर एवं वैज्ञानिक है।*

*इसके अतिरिक्त आधुनिक युग में जो नैतिकता का क्षरण हो रहा है, अवसाद ग्रस्तता व्यक्ति में बढ़ती जा रही है, संस्कृत भाषा इस समय एक कारगर औषधि का कार्य कर रही है। अतः सभी व्यक्ति को मिलजुलकर एक साथ एक जुट होकर सामूहिक हित के लिए कार्य करना चाहिए तभी सार्थक वाक्य होगा।*

***मुख्य शब्दः–*** *अवसाद ग्रस्त, अर्थकरी विद्या, उपचारात्मक एवं निदानात्मक, द्विगुणित क्रम, यूरोपीय विज्ञान*

आज मानव समाज की विक्षिप्त अवस्था में संस्कृत वाड्.मय ने एक शांतिप्रद औषध का काम किया है। आज का विद्वत समाज जिस नित नवीन ज्ञान को सिद्ध करने एवं नए–नए अन्वेषण में लगा है वो समस्त ज्ञान का भण्डार पूर्व से ही हमारे संस्कृत साहित्य के भण्डारण में है। यदि हम उसके महत्व को समझते और उसमें लगे रहते तो आज भी हम किसी से पीछे न रहते। आज का युवा जब संस्कृत भाषा और साहित्य से कुछ विमुख हुआ सा जान पड़ता है और इसे अर्थकरी विद्या न मानकर निरन्तर इसे उपेक्षित सा करता जा रहा है, तब आवश्यकता इस बात को परखने की हो जाती है कि क्या यह भाषा वास्तव में जनमानस के लिए हितकर है ? या हम व्यर्थ ही कहीं इसके संरक्षण के प्रयास में अपने युवाओं की शक्ति एवं उनके बहुमूल्य समय की उपेक्षा कर

एक अहितकर कार्य करने हेतु प्रयासरत् तो नही हैं? इस प्रश्न पर विचार करने हेतु हमें पूर्व से लेकर वर्तमान समय तक के संस्कृत के विकास के लिए देश एवं विदेशियों द्वारा किए गए कार्यों एवं उनसे प्राप्त सार्थक परिणामों पर विचार विमर्श करना होगा।

समस्त सांसारिक मनुष्यों द्वारा मुक्तकंठ से 'वेद' को उपलब्ध ग्रन्थों में प्राचीनतम होने का श्रेय दिया गया है। चाहे भारतीयों की धार्मिक भावना हो या विदेशियों की ज्ञान के अन्वेषण की उत्कण्ठा, दोनों ही 'वेद' के ज्ञान के भण्डार को स्वीकार करते हैं तथा 'वेद' शब्द को भी इस हेतु समीचीन एवं सार्थक मानते हैं। अंग्रेजों में से भी कतिपय विद्वानों द्वारा हमारे संस्कृत ग्रन्थों का पठन पाठन आरम्भ कर दिया गया था। सर विलियम जोन्स जैसे विद्वानों ने संस्कृत साहित्य में छुपे खजाने को खोजना प्रारम्भ किया। यूरोप के अन्य देशों, विशेषकर जर्मनी, फ्रांस और रूस में विद्वानों द्वारा संस्कृत का अभ्यास प्रारम्भ किया गया। हमारी संस्कृत भाषा के ज्ञान पर ही यूरोपीय विज्ञान की नींव पड़ी है। यूरोपियों ने संस्कृत भाषा का अभ्यास करते हुए ही पाया कि संस्कृत, फारसी, लातिनी, यूनानी, स्लाव, ल्यूतोनी केल्ती इत्यादि भाषाएँ एक ही वंश की प्रतीत होती हैं। ये एक नवीन ज्ञान का तथ्य विश्व के सामने उद्घाटित हुआ। इसी ज्ञान ने संसार में सभी भाषाओं के अध्ययन का एक दूसरा नया और व्यापक कारण प्रस्तुत कर दिया। इससे भाषा द्वारा एक ऐसा प्रशस्त मार्ग प्राप्त हो सका जिससे, मनुष्य मात्र के बन्द इतिहास को खोजा जा सके। इसी मार्ग के अनुसरण का प्रभाव ही था कि पश्चिमी विद्वानों द्वारा केवल भारतवर्ष के ही नहीं सारे संसार के लिए भाषा–विज्ञान एवं पुरातत्व, इन दो नए प्रकार की विधाओं की नीव डाली गई। भाषा विज्ञान की इस पद्वति द्वारा तुलनात्मक दृष्टि से विभिन्न भाषाओं के विकास और प्रगति की समीक्षा की जाती है एवं व्यापक नियम ढूँढ़ निकाले जाते हैं। भाषा के इतने महत्वपूर्ण होने के कारण ही इसकी समानता ब्रह्म से करते हुए महत्व बताया गया है कि

**एष हय्येव शून्य, एष हय्येव तुच्छ एष,**
**हय्येवाव्यक्तोऽदृश्य चिन्त्यो निर्गुणश्च।।**

ऐसा इसलिए भी है क्योंकि संस्कृत भाषा में शब्दों के उच्चारण का विज्ञान अपनी पराकाष्ठा पर है। इसी का मौलिक रूप संस्कृत व्याकरण है। इसकी वर्णमाला अद्भुत् है। इसके स्वरों का अभ्यास, प्रत्येक ध्वनियों के लिए पृथक् अक्षर और एक ध्वनि के लिए सिर्फ एक ही अक्षर, इस भाषा की वैज्ञानिकता को सिद्ध करती है। इसी प्रकार यजुर्वेद संहिता (वाजसनेयी) के पुरूषमेध प्रकरण में पेशे के आधार पर पुरूषों का नाम एंव संख्याओं की गणना, सामवेद के पंचविश ब्राह्मण में यज्ञ की दक्षिणाओं हेतु द्विगुणित क्रम जो कि श्रेणी गणित का उदाहरण है, दर्शाया गया है। शतपथ ब्राह्मण के अग्निचयन प्रकरण में ऋग्वेद् के अक्षरों से 12000 वृहती (36 अक्षर का) छंद, प्रजापति द्वारा बनाए गए ऋग्वेद् के कुल अक्षर (12000x36) = 432000, इसी तरह यजुर्वेद के 8000 और साम के 4000 वृहती छन्द और दोनों के 432000 अक्षर हुए, इन्हीं अक्षरों की पंक्ति छन्द बनाने से ऋग्वेद (432000÷40) = 10800 पंक्ति छन्द हुए तथा इतने ही यजु और श्याम मिल कर हुए। एक वर्ष में 360 दिन और एक दिन के 30 मुहुर्त होने से वर्ष भर के मुहुर्त भी 10800 होते हैं। अर्थात् तीनों वेदों से उनके पंक्ति छन्द दुबारा बनते हैं, जितने वर्ष में मुहुर्त होते हैं। रात दिन के 30 मुहुर्त, एक मुहुर्त के 15 क्षिप्र, एक क्षिप्र के 15 एतर्हि, एक एतर्हि के 15 इदानीं और एक इदानी के 15 प्राण होते हैं। इसी प्रकार अंकगणित की धन, ऋण, गुणा, भाग, वर्गमूल, धनमूल, ऐकिक नियम, भिन्न आदि गणितीय बातें वैदिक युग के आर्यों को ज्ञात थीं।

वैदिक यज्ञों की वेदियों हेतु कोण तथा वर्ग आदि का ज्ञान था। बोधायन, आपस्तम्ब आदि रेखागणित से सम्बन्धित प्राचीनतम ग्रन्थ हैं जिसकी रचना 500 ईसा पूर्व हुई है, आर्यभट्ट एवं ब्रह्मपुत्र द्वारा ट्रिग्नोमेट्री (त्रिज्यामिति) के ज्ञान का विकास किया गया। गणित के महान पण्डित आर्यभट्ट ने ज्या, कोटिज्या की विवेचना की जो गणित के

आधार हैं। जिनके द्वारा नक्षत्रों की सही गति तथा स्थिति का पता लगता है। इन्ही सब अध्ययनों का परिणाम ही है कि अभी हाल में भारतीय अन्तरिक्ष शोध संस्थान (ISRO) द्वारा सतीश धवन स्पेश सेन्टर श्री हरि कोटा नेलोरे जिला आन्ध्र प्रदेश से 22 जुलाई 2019 को 2:43 अपरान्ह GSLV Mark III से एक अन्तरिक्ष यान चन्द्रयान–2 सफलता पूर्वक चन्द्रमा के साउथ पोलर के विषय में जानने हेतु भेजा गया। इसके साथ ही रूस, अमेरिका, चीन के बाद भारत विश्व का चौथा ऐसा देश बन सका जिसने चन्द्रमा पर साफ्ट लैंडिंग की हो।

इस प्रकार स्पष्ट है कि लिपि वर्ण एवं वर्णमाला हमारे यहां वैदिक काल से ही प्रचलित है। गणितीय गणना भारत के लिए नवीन तथ्य नही है। संस्कृत भाषा की पुस्तकों ने सारे संसार को प्रभावित किया है। 'संस्कृत साहित्य का इतिहास' का अनुवाद करते हुए डा0 मंगल देव शास्त्री द्वारा पृ0सं0 19–20 में संस्कृत ग्रन्थों का मध्य एशिया, चीन, तिब्बत तथा जापान में प्रभाव बताते हुए अन्तर्राष्ट्रीय महत्व बताया गया है। संस्कृत में लिखे कथा, कहानियों के साहित्य ने कथा साहित्य के तुलनात्मक अध्ययन को फैलाया। इसी क्रम में सन् 1854 ई0 में वाजने (Wagner) ने घोषित किया कि ग्रीस का साहित्य भारत का ऋणी है। सम्पूर्ण विश्व में गणित, ज्योतिष, विज्ञान आदि की आज जो उन्नति पाई जाती है, उसका मूल कारण वर्तमान अंकक्रम है, इस अंकक्रम के एक से नौ तक अंक और शून्य, जिससे अंकविद्या का सारा काम चलता है, भारतवारिसयों द्वारा ही निकाला एवं अपनाया गया है, जिसे समस्त विश्व ने अपनाया।

3. पतंजलि योगसूत्र के प्रसिद्ध भाष्यकार व्यास ने लगभग 300 ई0 में एक उदाहरण द्वारा लिखा कि वही 1 का अंक सैकड़े के स्थान पर सौ, दहाई के स्थान पर दस और इकाई के स्थान पर एक के लिए प्रयुक्त होता है। ज्योतिष का विचार तो भारत में वैदिक काल से ही पर्याप्त था।

4. संयुक्त राज्य अमरीका के एक महान् अणु वैज्ञानिक ने जब प्रथम आणविक विस्फोटक देखा जहां धारित्री की लपटें और धुआं उठकर न्यू मेक्सिको नगर के वातावरण को स्पर्श कर रहे थे तो कहा कि उसे भगवद्गीता की याद आ रही है। गीता के निम्न श्लोक का उसने उद्धृत भी किया।

''दिवि सूर्य सहस्रस्य भवेद्यु गपदुत्थिता।
यदि भाः सदृशी सा स्याद् भासतस्य महात्मनः''
''कालोऽस्मि लोक क्षयकृत्प्रवृद्धो,
लोकान्समाहर्तुमिह प्रवृत्तः।
ऋतेऽपि त्वां न भविष्यन्ति सर्वे
येऽवस्थिताः प्रत्यनीकेषुयोधाः।।
भगवद्गीता, अध्याय 11, श्लोक 12–32

(अर्थात् आकाश में हजार सूर्यों के एक साथ उद्य होने से जो प्रकाश होगा वह भी उस परमात्मा के प्रकाश के सदृश कदाचित् ही होगा मैं लोगों का नाश करने वाला प्रबुद्ध महाकाल हूं और इस समय इन लोकों को नष्ट करने के लिए प्रवृत्त हुआ हूं।) इसी प्रकार भारत के विभिन्न कार्य क्षेत्रों में भिन्न–भिन्न संस्कृत के प्रकाण्ड विद्वान हुए जिनसे नवीन विधाओं का सूत्रपात हुआ। ये निम्नवत् हैं :– आर्युविज्ञान का महान पण्डित ईसवी सन् प्रथम शताब्दी में **'सुश्रुत'** हुआ, जिसने 'सुश्रुत संहिता' लिखी।

505–587 ईस्वी में भौतिक शास्त्री **वराहमिहिर** जिसने 'वृहत्संहिता', 'पञ्चसिद्वान्तिका', 'वृहज्जातक' तथा 'लघु जातक' ग्रन्थों की रचना की। 598 ईस्वी में **'ब्रहमगुप्त'** जिसने, बीजगणित एवं रेखागणित की अनेक नई मान्यताएं स्थापित की तथा 'ब्रम्ह स्फुट सिद्धान्त' नामक ग्रन्थ लिखा। यह महान् गणितज्ञ था। 150 ईस्वी में महान रसायन शास्त्रज्ञ **'नागार्जुन'** हुए। छठी शताब्दी ईस्वी में **'वाग्भट्ट'** आयुर्वेद का विद्वान हुआ इसने 'अष्टाँग हृदय' और 'अष्टाँग संग्रह' तथा 'चरक सुश्रुत' का सार लिखा। विश्वविख्यात ज्योतिषाचार्य **भास्कराचार्य** थे जिन्होंने 'सिद्धान्त शिरोमणि' और 'कृष्ण कुतूहल नामक ग्रन्थ लिखे। इसी प्रकार संस्कृत की कई शाखाएं विज्ञान की विभिन्न

शाखाओं पर भी आधारित हैं। जैसे भारतीय संस्कृत के दर्शन का मूल आधार भौतिकी पर आधारित है क्योंकि दर्शन का आधार वास्तव में प्रकृति के निरीक्षण और पर्यालोचन से निश्चित किए हुए नियम ही होते हैं। प्रकृति विषयक परखे हुए और श्रृंखलाबद्ध ज्ञान को ही हम विज्ञान कहते हैं। उस ज्ञान के आधार पर तत्वों के विषय में हम जो अनुमान एवं कल्पनाएं करते हैं, वही दर्शन है। ऋग्वेद में चन्द्रमा का सूर्य का प्रकाश लेकर चमकना, वेदो में सूर्य की किरणों द्वारा पानी से भाप बनकर उड़ना एवं बादल बनकर बरसने का उल्लेख है। साख्यं दर्शन में भी पदार्थ और शक्ति अणु परमाणु संघटन–विघटन आदि वर्णन प्राप्त होता है।वैद्यक के क्षेत्र में आयुर्वेद एवं अर्थववेद प्रायः समकालिक है, वैदिक वाड.मय में हम शरीर विद्या गर्भविद्या और स्वास्थ्य विज्ञान का मूल पाते हैं।

अथर्ववेद के समय ही मनुष्य के शरीर में हडिड्यों की ठीक से गिनती की गई थी। 'चरक', 'सुश्रुत' एवं 'वाग्भट्ट' वैद्यक सम्बन्धित ग्रन्थ है। इसी प्रकार संस्कृत साहित्य में वनस्पतिशास्त्र का उल्लेख वृक्षायुर्वेद अथवा भेषज विद्या नाम से किया गया तथा अर्थशास्त्र, अग्निपुराण और वहत् संहिता में गुल्म वृक्षायुर्वेदज्ञ शब्द इसी से परिचित है। वास्तुकला एवं चित्रकला से सम्बन्धित ग्रन्थ मत्स्य पुराण, अग्निपुराण, भविष्यपुराण, वाराहमिहिर की वृहत् संहिता आदि संस्कृत में ही लिखे गए हैं। सामवेद को संगीत का भण्डार कहा गया। इस प्रकार स्पष्ट है कि हमारी संस्कृत भाषा पूर्णतः वैज्ञानिक एवं कौशलपूर्ण है। यदि आधुनिक समय में कम्प्यूटर के युग की बात करें तो भी यह भाषा कहीं पीछे नही है। पाणिनी द्वारा रचित 14 माहेश्वर सूत्रों को कम्प्यूटर की 'जावा' से अधिक वैज्ञानिक एवं उपयोगी माना गया है। अभी हाल ही में एच0आर0डी0, मंत्री रमेश पोखरयाल निशंक ने 57वें आई0आई0टी0 बाम्बे के दीक्षान्त समारोह को सम्बोधित करते हुए कहा कि 'अमेरिकी अंतरिक्ष एजेन्सी' 'नासा' का विश्वास है कि संस्कृत भाषा कम्प्यूटर प्रोग्रामिंग हेतु दुनिया की सबसे वैज्ञानिक भाषा है। भविष्य के लिए, अगर कम्प्यूटर कभी बोलेगा तो उसमें संस्कृत भाषा को ही बोलने की क्षमता होगी। आज के आधुनिक युग में जब कि एक दूसरे के भावनाओं की कृशता बढ़ती जा रही है, परिणाम स्वरूप व्यक्ति का एकाकी होकर अवसाद ग्रस्त होना स्वाभाविक सा होता जा रहा है, तब ऐसी अवस्था में करूणा एवं 'आचरण की मांग हमारे संस्कृत साहित्य में ही की जाती है। अथर्ववेद का वचन है :– समान हृदयता, समान मानसिकता, अप्रतिकूलता को मैं तुम लोगों के लिए सृजन करता हूँ तुम एक–दूसरे से उसी प्रकार प्रीति प्रकट करो जैसे गौ अपने नवजात वत्स के लिए करती है।

**आत्मा ज्ञातव्य इत्येतन्मोक्षार्थ न च चोदितम्।**
**कर्म प्रवृत्ति हेतुत्वं आत्मज्ञानस्य लक्ष्यते।।**

**–शास्त्रदीपिका**

इसी प्रकार जब हमें अपने चारों ओर निरन्तर नैतिकता का ह्रास होता दिखाई देता है तब एक साधक की भांति मौन चिन्तन की आवश्यकता और अधिक बढ़ जाती है, स्वयं को जानना योग की विधाओं का मूल है, ऐसे में मौन चिन्तन अति आवश्यक हो जाता हैं, अतः इस भौतिक एवं मानसिक स्वस्थता हेतु मौन का सम्बन्ध परम ब्रहम से स्थापित करते हुए हमारे संस्कृत ग्रन्थों में कहा गया है कि –

**मौन व्याख्या प्रकीर्तित पर ब्रहम–तत्वम्**

**– दक्षिण मूर्ति स्त्रोत**

(अर्थात् उस निरपेक्ष या परम (ब्रह्म) की प्रकृति मौन की टीका द्वारा ही अभिव्यक्त होती है)

शंकर के अनुसार भी ब्रहम की कल्पना भी द्विविध है– **द्वि रूपं हि ब्रहमावगम्यते नाम–रूप–विकार –भेदोपाधिविशिष्टम् तद्विपरीतं सर्वोपाधि वर्जितम्।**

उपयुर्क्त समस्त तथ्यों को अवलोकन करने के पश्चात् अब यह तथ्य स्पष्ट हो जाते हैं कि संस्कृत भाषा एवं साहित्य पूर्णतः वैज्ञानिक, ज्ञानवर्धक, कौशल विकास के लिए परिपूर्ण एवं

प्रत्येक क्षेत्र में रोजगार उपलब्ध कराने वाला है, आज का युवा जब रोजगार के अवसर तलाश करते करते अवसाद ग्रस्त हो जाता है तो उसका उपचार करने में भी संस्कृत सक्षम है। उपचारात्मक एवं निदनात्मक समस्त अवसरों को यह उपलब्ध कराता है। इन तथ्यों के अध्ययन के पश्चात् अब इस प्रश्न का उत्तर स्वयं ही प्राप्त हो जाता है कि यह सम्पूर्ण संस्कृत वाड्.मय सर्वजन हिताय है अथवा नहीं। आवश्यकता है जनमानस को एक खुले हृदय से निर्णय लेने की जो कि किसी पूर्वाग्रह या कुण्ठा से रहित होकर किया जाए। अतः कह सकते है कि 21वीं सदी का यह दौर भूमण्डलीकरण अथवा वैश्वीकरण का है। वैश्वीकरण का एक सामान्य अर्थ है– 'विश्वग्राम' इसका तात्पर्य है वह प्रक्रिया जिसके द्वारा विश्व के समस्त मनुष्य एक समाज के सदस्य हों।

'संगच्छध्वं संवदध्वं,
सं वो मनासिं जानताम्।
समानी वः आकूतिः समाना हृदयानि वः
समानमस्तु वो मनो
यथा वः सुप्तहासति।।

ऋग्वेद हमें बताता है कि 'प्रेमी ऋषि उस रहस्यमयी सत्ता को देखता है, जहां सम्पूर्ण जगत एक ही गृह प्राप्त करने के लिए आता है, **'वेनस्तत्पश्यन्निहितां गुहा सद्यात्रा विश्वं भवत्येकनीडम्'।**

## सन्दर्भ

1. ओझा, महामहोपाध्याय और गौरी शंकर, हीराचंद, (1928). मध्यकालीन भारतीय संस्कृत, प्रयाग, पृ0 108।
2. दत्त विभूति भूषण एवं सेनगुप्त श्री0एस0पी0, कल्चरल हेरिटेज ऑफ इण्डिया, जि0 3।
3. डा0 राधाकृष्णन् सर्वपल्लि, भारतीय संस्कृति, कुछ विचार, अनुवादक श्री राम नाथ सुमन, संस्करण, (1996). राजपाल एण्ड सन्स, नई दिल्ली।
4. प्रसाद, राजेन्द्र, संस्कृत और संस्कृति संस्करण, (1974, 1979). मोती लाल बनारसीदास, दिल्ली।
5. पाण्डेय, रमा, धर्म एवं संस्कृति, सं0 (2010). कला प्रकाशन, बनारस – 5
6. चन्द्र, शास्त्री आचार्य रमेश भारतीय संस्कृति के तत्व, प्रकाशन – जयपुर।
7. विण्टरनिट्ज, एम0, (1975). प्राचीन भारतीय साहित्य का इतिहास दिल्ली।